

BrahmAkrita Ramastutih

——
ब्रह्माकृता रामस्तुतिः

——
Document Information



Text title : brahmadevakRitA rAmastutiH

File name : rAmastutiHbrahankRitshivarAmAyaNa.itx

Category : raama, stotra

Location : doc_raama

Author : Brahmadeva

Proofread by : Mohan Chettoor

Description-comments : shivarAmAyaNa

Latest update : June 23, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 17, 2022

sanskritdocuments.org



BrahmAkrita Ramastutih

ब्रह्माकृता रामस्तुतिः



ईश्वर उवाच -

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ब्रह्मा देवर्षिसंयुतः ।

उवाच वचनं तत्र रामं राज्ञवलोचनम् ॥ १ ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - भगवान् शंकर ने पार्वती से कडा-डे देवि ब्रह्मा
आदि देवताओं ने संयुक्त होकर कमल के समान नेत्रों वाले राम से जो
कडा, वड अब मैं बताऊंगा, उसे सुनो ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच -

त्वमेव परमं ब्रह्म त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ।

दृश्यसे ग सर्वभूतेषु ब्राह्मणेषु विशेषतः ॥ २ ॥

दृक्षु सर्वासु गगने पर्वतेषु वनेषु च ।

अन्ते पृथिव्याः सलिले वायौ वह्नौ मण्डोदधौ ॥ ३ ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - ब्रह्मा ने कडा-डे राम ! आप ही परब्रह्म हो, आप में
ही सब कुछ प्रतिष्ठित है । आप सभी प्राणियों में दिभायी पड़ते हो,
विशेषकर ब्राह्मणों में (तुम्हारी प्रतिष्ठा है)। सम्पूर्णा दिशाओं में,
आकाश में, पर्वत में, वनों में, पृथ्वी के प्रत्येक छोर में, जल,
वायु, अग्नि और समुद्र में (आप सभी जगह विद्यमान हैं ।) ॥ २-३ ॥

अहं ते हृदयं राम जिह्वा देवी सरस्वती ।

देवा गात्रेषु रोमाणि मण्डोदेवोप्यडडकृतिः ॥ ४ ॥

सप्तर्षयो वसिष्ठाद्याः देवाः साग्निपुरोगमाः ।

पशुपक्षिमृगाः कीटाः समुद्राः कुलपर्वताः ॥ ५ ॥

स्थावराः जङ्गमाः ये ये भुवनानि यतुर्दश ।

वृक्षौषधिलताः देव गात्रेषु तव निर्मिताः ॥ ६ ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - डे राम ! मैं (ब्रह्मा) तुम्हारा हृदय हूँ,

देवी सरस्वती जिह्वा, आपके शरीर की रोमावलिखाँ डी सम्पूर्णा देव
हैं और मडादेव आपके अभिमान हैं । वशिष्ठ आदि सप्त ऋषि, आगे
यलने वाले अग्नि सदृश देवता, पशु, पक्षी, छिरण, कीट, समुद्र,
सम्पूर्णा पर्वत, स्थावर, जङ्गम और जो जो यौदल लुवनों में
अवस्थित वृष, औषधिलता और देवता हैं, आपके शरीर से डी
निर्मित हैं ॥ ४-६ ॥

कुक्षौ त्वदीये तिष्ठन्ति परमाणव अेव ते ।
सर्वेषां जन्मनिधनं प्राणकोऽसि न संशयः ॥ ७ ॥

मायाश्रयत्वाज्जुवानां पिता भवसि सुप्रत ।
सर्वव्यापी सर्वसाक्षी शिन्मयस्तमसः परः ॥ ८ ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - तुम्हारी कोष में परमाणुओं के समान जुव
निवास करते हैं । आप डी सभी के जन्म अेवं मृत्यु के कारण हैं,
इसमें कोठ संशय नहीं है । डे प्रतधारी ! माया के आश्रयीभूत
उत्पन्न डोने वाले आप सभी जुवों के पिता हैं । आप अन्धकार से परे,
शिन्मयस्वरूप, सर्वसाक्षी और सर्वव्यापी हैं ॥ ७-८ ॥

निर्विकल्पो निराभासो निश्शङ्को निरुपद्रवः ।
निर्लेपः सकलाध्यक्षो मलापुरुष ईश्वरः ॥ ९ ॥

अलं विषणुश्च रुद्रश्च शङ्करश्च निरञ्जनः ।
त्वत्तो नान्यः परो देवस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ १० ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - (डे राम ! आप डी) निर्विकल्प, निराभास, निशंक,
निरुपद्रव, निर्लेप, सकलाध्यक्ष, मलापुरुष और ईश्वर हैं ।
मैं विषणु हूँ, रुद्र हूँ, शंकर हूँ, निरञ्जन हूँ । आप से
अऽःा कोठ अन्य देवता तीनों लोकों में विराजमान नहीं हैं ॥ ९-१० ॥

इति स्तुत्या दैवगणैश्चतुर्द्वोऽब्रवीत्पुनः ।
राम त्वं दृष्टनाशाय ह्यवतीर्णो रघोः कुले ॥ ११ ॥

अस्माभिः प्रार्थितः पूर्वं तत्सत्यं कृतवानसि ।
याडि राम गृहीत्वाश्वं यज्ञशेषं समापय ॥ १२ ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - राम डी अैसी स्तुति करके देवगणों से यतुर्मुभ
ब्रह्मा जु ने द्विर कडा डि डे राम ! दृष्टों का विनाश करने के लिअे डी

आप राजा रघु के कुल में अवतीर्ण हुये । पूर्व में हम लोगों ने जो-जो
प्रार्थना की, उसे सही रूप में आपने किया । हे राम ! अश्वमेधीय
घोड़ों को लेकर जाइये और अवशिष्ट यज्ञ को पूरा कीजिये ॥ ११-१२ ॥

कलास्तवसुरेन्द्रादीन् सन्तर्पय विधानतः ।

ऐकादशसहस्राणामब्धानां पालय क्षितिम् ॥ १३ ॥

ततः परं निजं धाम यास्यामि त्वं परात्परम् ।

एति विज्ञाप्य देवेशो ययौ देवगाणैस्सहम् ॥ १४ ॥

मालिनी छिन्ही व्याख्या - तुम्हारी कलाओं के रूप में अवस्थित छन्द आदि
सम्पूर्ण देवताओं को विधि-विधान से सन्तर्पित करो और एक हजार
युगों तक पृथ्वी का पालन करो । इसके बाद हे परात्पर ! आप अपने
धाम जायेंगे । औसा कडकर छन्द अन्य देवताओं के साथ चले गये ॥ १३-१४ ॥

अथागमत्पुष्कराक्षो पूजामादाय सुप्रभाम् ।

रत्नसिंहासनं प्रादाद् रामायामिततेजसे ॥ १५ ॥

रामस्य यराण्ड्रन्दं रत्नपुष्पैरपूजत् ।

पुपूज परया भक्त्या नमस्कृत्वा पुनः पुनः ॥ १६ ॥

मालिनी छिन्ही व्याख्या - इसके बाद प्रातःकाल पुष्कराक्ष पूजन की सामग्री
लेकर आया और अण्ड्रन्द तेजस्वी राम के लिये रत्नसिंहासन प्रदान किया ।
राम के दोनों यराण्ड्रों को उसने रत्न पुष्पों से पूजा की । भक्ति
से पूजन करके बार-बार उन्हें प्रणाम किया ॥ १५-१६ ॥

रामाज्ञां य गृहीत्वाऽसौ ययौ स्वपुरीं प्रति ।

ततो रामस्तदा तत्र प्रोवाच जनसंसदि ॥ १७ ॥

किङ्कर्तव्यमितोऽस्माभिः यूयं वदत मामकाः ।

एत्युक्ते य तदा रामे सुग्रीवः प्राह भूमिपम् ॥ १८ ॥

मालिनी छिन्ही व्याख्या - और राम की आज्ञा लेकर वह पुष्कराक्ष अपनी
नगरी चित्रवती की ओर प्रस्थान किया । उसके बाद राम ने एक जनसभा
को सम्बोधित किया और कहा कि अब इसके बाद हम लोगों को क्या करना
चाहिये, आप लोग मुझे बताइये । राम के औसा कडने पर सुग्रीव ने राजा
राम से कहा ॥ १७-१८ ॥

अत्रेय कार्यं सर्वं वै जातं मे भावि तत्त्वतः ।

गमनं दृश्यते राजन् मेरौ छि कमलेक्ष्ण ॥ १८ ॥

सुग्रीवस्य वयस्तथ्यं मत्वा रामः प्रतापवान् ।

सर्वानाज्ञाप्य गमने रामः सैन्य-समावृतः ॥ २० ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - यहाँ से जाने के बाद ही सभी कार्य अपने आप हो जायेंगे; क्योंकि ऐसी भावी सूचनाओं मिल रही हैं; क्योंकि वे राजन् ! सुमेरु पर्वत विष्णु की शरण में जा रहा है । सुग्रीव के वयनों और तथ्यों को मानकर प्रतापी राम ने सेना सजित सभी को जाने का आदेश दिया ॥ १८-२० ॥

पुष्पकं तत्समारुह्य देवतागणपूजितः ।

आगत्य येन मार्गेण ययौ मार्गेण तेन सः ॥ २१ ॥

सप्तद्वीपा नतिक्कम्य डेमार्द्रिं सुमपागमत् ।

तत्र देवगणान्नत्वा मेरौ स्थित्वा मडाबलः ॥ २२ ॥

मालिनी छिन्दी व्याख्या - देवता गणों को पूजित करके सभी लोग पुष्पकविमान पर आरूढ़ हुए । वल विमान जिस मार्ग से आया था, उसी मार्ग से वापस लौटा । सप्त द्वीपों को पार करके वल विमान डेमार्द्रि पहुँचा वहाँ देवगणों को प्रणाम करके मडाबली सुमेरु वहाँ स्थित हो गया ॥ २१-२२ ॥

मेरुणा दत्तमभिलं यत्प्रामः प्रगृह्य सः ।

मेरीरवैस्तूर्यघोषैर्विदारितदिगन्तरः ॥ २३ ॥

सर्वैः साकं मुदा रामो भ्रातृभिः सजितः प्रभुः ।

मङ्गलालङ्कृतं दिव्यमयोध्यानगरं ययौ ॥ २४ ॥

एति श्रीशैवराभायणे पार्वतीश्वरसंवादे ऐकादशोऽध्याये

ब्रह्मप्रोक्ता रामस्तुतिः समाप्ता ।


मालिनी छिन्दी व्याख्या - सुमेरु के द्वारा अपना सब कुछ (राम को) प्रदान कर दिया गया, जो उसने यत्पूर्वक प्राप्त किया था, तभी मेरीरव अवं तूर्य निनाद से दिग-दिगन्तर-परिव्याप्त हो गये । सभी के साथ प्रसन्न राम, अपने भाईयों सजित, मंगलों से अलंकृत दिव्य अयोध्या नगरी गये ॥ २३-२४ ॥

एस प्रकार शिवपार्वती संवाद रूप में प्राप्त शैवराभायण का


पार्वती-श्वर संवाद नामक ग्यारहवाँ अध्याय समाप्त हुआ जिस में

अभ्रमाकृते ने की दुर्घट रामस्तुति पायी जाती है ।

Encoded and proofread by Mohan Chettoor

——
BrahmAkrita Ramastutih

pdf was typeset on December 17, 2022

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

